

किया हुआ, सुनिर्मित, सुसंपादित 2. कृत्रिम रूप से बनाया हुआ, पकाया हुआ 3. अभिमंत्रित, पवित्र किया हुआ 4. श्रेष्ठ/सर्वोत्तम 5. दिव जति का वह व्यक्ति जिसका शुद्धि संस्कार हो गया हो 6. आर्यों की प्रसिद्ध भाषा, देववाणी, संस्कृत भाषा।

संस्कृति स्त्री. (तत्.) 1. किसी व्यक्ति, जाति, वर्ग, राष्ट्र आदि की वे सब बातें जो उसके मन, रुचि, आचार-विचार, आचरण, वाणी, कला कौशल और सभ्यता के क्षेत्र में बौद्धिक विकास की सूचक होती हैं 2. सफाई, शुद्धि, संस्कार, सुधार।

संस्कृतिकरण पुं. (तत्.) 1. संस्कृत/शुद्ध करने की क्रिया या भाव 2. अन्य भाषा के शब्दों को संस्कृत रूप देना।

संखलन पुं. (तत्.) खलन, पात, निपात।

संस्तंभ पुं. (तत्.) 1. रोकना, थामना 2. गति का सहसा रोधन, एक बारगी रुक जाना 3. निश्चेष्टता 4. स्तब्धता 5. लकवे या इसी तरह के अन्य रोग से किसी अंग का बेकार और सुन्न हो जाना 6. दृढ़ता/धारिता 7. हठ, जिद 8. आधार, सहारा, अवलंब।

संस्तंभन पुं. (तत्.) 1. गति का एकाएक रुक जाना, रोकना 2. निश्चेष्ट या स्तब्ध करना या होना 3. सहारा देना या लेना।

संस्तब्ध वि. (तत्.) 1. एकाएक रुका या ठहरा हुआ 2. निश्चेष्ट/स्तब्ध 3. सहारा, अवलंब देकर रोका हुआ।

संस्तंभी वि. (तत्.) संस्तंभन करने वाला।

संस्तर पुं. (तत्.) 1. तह, परत 2. बिछौना, बिस्तर, पलंग, शय्या 3. एक प्रकार का यज्ञ 4. तालाब या नदी का नीचे वाला भू-भाग/तलहटी, तल 5. भूगर्भ में ऐसी तह या परत जो एक ही तरह के तत्व या पदार्थ से बनी हो। जैसे- कोयले या चूने के संस्तर आदि।

संस्तरण पुं. (तत्.) 1. प्रसारण, फैलाना, पसारना 2. बिछौना, बिछावन, बिस्तर 3. छितराना, बिखेरना 4. तह या परत चढ़ाना।

संस्तव पुं. (तत्.) 1. स्तुवन, प्रशंसा, स्तुति, तारीफ 2. उल्लेख, कथन 3. परिचय, जान पहचान 4. घनिष्ठता, हेलमेल।

संस्ताव पुं. (तत्.) 1. यज्ञ में स्तुति करने वाले ब्राह्मण के बैठने का स्थान 2. प्रशंसा, स्तुति 3. जान-पहचान, परिचय।

संस्ताव्य वि. (तत्.) प्रशंसनीय, स्तुति योग्य, जिसकी प्रशंसा या संस्ताव हो सके।

संस्तीर्ण वि. (तत्.) 1. फैलाया या पसारा हुआ, विस्तारित 2. बिछाया हुआ 3. छिटकाया या बिखेरा हुआ 4. ढका या छिपाया हुआ।

संस्तुत वि. (तत्.) 1. जिसकी सिफारिश की गई हो, जिसकी प्रशंसा या स्तुति की गई हो 2. साथ में गिना हुआ 3. ज्ञात, जाना हुआ 4. परिचित।

संस्तुति स्त्री. (तत्.) 1. प्रशंसा, स्तुति 2. सिफारिश, अनुशंसा।

संस्तृत वि. (तत्.) संस्तीर्ण।

संस्तै वि. (तत्.) श्वास, प्राण।

संस्थ पुं. (तत्.) 1. अपने देश का निवासी/ नागरिक, स्वेदश वासी 2. चर, दूत।

संस्था स्त्री. (तत्.) 1. राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय, क्षेत्रीय, स्थानीय स्तर पर धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक आदि किसी लोकहितकारी उद्देश्य, कार्य के लिए विशेष सिद्धान्तों और नियमों के आधार पर गठित समाज या परिषद 2. किसी तात्कालिक या सीमित उद्देश्य के लिए संगठित समाज, समूह, वर्ग जैसे- सहकारी संस्था 3. राजनीतिक या सामाजिक जीवन से संबंध रखने वाला कोई नियम, विधान या परंपरागत प्रथा जो किसी समाज में समान रूप से प्रचलित हो जैसे- हिन्दुओं में विवाह धार्मिक संस्था है 4. ठहरने की क्रिया या भाव, ठहराव, स्थिति 5. प्रगट होने की क्रिया या भाव, अभिव्यक्ति, आविर्भाव 6. बंधा हुआ नियम, मर्यादा, विधि, रूढ़ि 7. आकृति, रूप 8. कोई काम चीज या बात निर्णायक स्तर तक लाने की क्रिया, आवश्यक,